हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

# उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-35 ♦देहरादून - रविवार 06 जुलाई 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-

## सीएम धामी ने की धान रोपाई, किसानों के श्रम को किया नमन

खटीमा के नगरा तराई क्षेत्र में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को अपने खेत में धान की रोपाई कर किसानों के परिश्रम, त्याग और समर्पण को नमन किया। उन्होंने कहा कि खेतों में उतरकर पुराने दिनों की यादें ताजा हो गईं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अन्नदाता न केवल हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, बल्कि वे हमारी संस्कृति और परंपराओं के संवाहक भी हैं।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत "हुड़किया बौल" के माध्यम से भूमि के देवता भूमियां, जल के देवता इंद्र और छाया के देवता मेघ की वंदना भी की। मुख्यमंत्री के इस सांस्कृतिक जुड़ाव और कृषकों के साथ आत्मीय सहभाग ने क्षेत्रीय जनता को गहरे स्तर पर

प्रेरित किया।

मुख्यमंत्री धामी की यह पहल उत्तराखंड की ग्रामीण संस्कृति, कृषकों की अहमियत और पारंपरिक लोककलाओं के संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है

## केदारनाथ यात्रा पैदल मार्ग पर संवेदनशील क्षेत्रों में लगाए गए नए चेतावनी बोर्ड

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ धाम यात्रा को सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित बनाए रखने हेतु जिला प्रशासन रुद्रप्रयाग द्वारा विशेष सतर्कता बरती जा रही है। मॉनसून सत्र को ध्यान में रखते हुए यात्रियों की सुरक्षा के मद्देनजर गौरीकुंड से केदारनाथ तक के पैदल मार्ग पर विभिन्न संवेदनशील स्थलों पर चेतावनी एवं दिशा–निर्देश संबंधी बोर्ड लगाए गए हैं। जिलाधिकारी प्रतीक जैन के निर्देशानुसार जिला प्रशासन ने गौरीकुंड, घोड़ा पड़ाव, जंगलचट्टी, भीमबली सहित अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों में ऐसे स्थानों की पहचान की है जहाँ भूस्खलन, पत्थर गिरने, मार्ग फिसलन, अथवा नदी–नालों का जल स्तर बढ़ने की संभावना अधिक होती है। इन सभी चिन्हित स्थानों पर स्पष्ट चेतावनी बोर्ड लगाए गए हैं, जिनमें यात्रियों को सतर्क रहने, मार्ग पर न रुकने तथा प्रशासनिक दिशा–निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग गुप्तकाशी विनय झिंक्वाण ने बताया कि पूर्व में भी दस संवेदनशील स्थलों पर चेतावनी बोर्डों को लगाया गया है तथा वर्तमान में 08 नए चेतावनी बोर्डों को पत्थर गिरने तथा भूस्खलन संभावित संवेदनशील स्थलों पर लगाया गया है। इन चेतावनी बोर्डों के माध्यम से यात्री सचेत रहेंगे जिससे उनकी सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

# क्लीन और ग्रीन कांवड़ यात्रा का दें संदेश

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कांवड़ यात्रा के सफल संचालन के लिये उत्तराखंड कांवड़ सेवा एप बनाए जाने के निर्देश दिए है इसमें कांवड़ियों की सभी डिटेल उपलब्ध कराई जाए। इस एप का उपयोग हर वर्ष आयोजित होने वाले कांवड़ यात्रा के दौरान किया जा सकेगा। इससे कांवड़ यात्रा पहले से अधिक सुगम और सुरक्षित हो सकेगी।

गुरूवार को मेला नियन्त्रण भवन हरिद्वार में उच्चाधिकारीयों के साथ कांवड मेला–2025 की तैयारियों की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कांवड़ यात्रा के सकुशल एवं सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने को जिला प्रशासन, पुलिस एवं अन्य सम्बन्धित विभागों को चाक चौबंद व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा ऐसे राज्य जहां से अधिकांश कावड़िए आते हैं उन राज्यों से परस्पर समन्वय, रियल टाइम डाटा शेयरिंग और

सुरक्षात्मक दृष्टि से सभी आवश्यक इनपुट्स साझा किए जाएं। मुख्यमंत्री ने कांवड़ यात्रा को आगामी कुंभ मेले का ट्रायल बताते हुए कहा कि ये अनुभव आगामी कुंभ मेले भी काम आएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा इस वर्ष हमने क्लीन और ग्रीन कांवड़ यात्रा का संदेश देना है। उन्होंने कहा स्वच्छता हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। हरिद्वार, रुड़की, ऋषिकेश और आस पास के क्षेत्रों में हर 1–2 किलोमीटर पर मोबाइल टॉयलेट, कूड़ा निस्तारण के लिए विशेष गाड़ियों की तैनाती की जाए। उन्होंने कहा कांवड़ रूट पर हर 2 से 3 किलोमीटर के अंदर स्वास्थ्य केंद्र, एम्बुलेंस और मेडिकल स्टाफ की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए साथ ही हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि कावड़ियों की सुविधा को देखते हुए स्थानीय निकायों के सहयोग से रैन बसेरों, टेंट सिटी, आश्रय स्थलों का निर्माण किया जाए। यात्रा मार्गो पर आरओ टैंकर, वाटर एटीएम की व्यवस्था की जाए। कावड़ यात्रा से संबंधित सोशल मीडिया में अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ भी सख्ती से कार्यवाही करने के निर्देश दिए। कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं के लिए क्या करें और क्या नहीं करें की जानकारी यात्रा मार्गों पर प्रदर्शित करने के निर्देश दिए।

## अभ्युदय वात्सल्यम् संस्था द्वारा वृक्षारोपण एवं हरेला उत्सव

बता दें कि सम्पूर्ण भारत में सेवारत अभ्युदय वात्सल्यम संस्था,लोक कला लोक संस्कृति की अभिवृद्धि प्रचार प्रसार सहित जल सरक्षण पर्यावरण संरक्षण हेतु निरंतर प्रयासरत है। संस्था द्वारा देवभूमि उत्तराखण्ड में जरूरतमंद बच्चों महिलाओं, वृद्धों की

सेवा जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ एवं पोषण अभियान सहित अनेक लोकोपयोगी सामाजिक गतिविधियों में अपने संसाधन से सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

अभ्युदय वात्सल्यम् संस्था की अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ.(श्रीमती)गार्गी मिश्रा ने बताया कि दिनाक 01 जुलाई 2025 से 15 जुलाई 2025 तक विभिन्न विद्यालयों/संस्थानों में औषधीय पौधों का रोपण एवं वृक्षारोपण,जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, भूमिगत जल संचयन का संदेश देते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित जाना प्रस्तावित है। गार्गी जी ने बताया कि इसके साथ ही सस्था द्वारा पूर्व की तरह पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण एवं सास्कृतिक गतिविधियों को समाहित करते हुये दिनांक 16जुलाई,2025. दिन बुधवार को ष्हरेला उत्सव लोक संस्कृति महोत्सव आयोजित किया जाना भी प्रस्तावति है जिसमें उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न लोक सस्कृति कलाकारों द्वारा पर्यावरण संरक्षण, जल–संरक्षण,लोक पर्व के महत्व को दर्शाती हुई विभिन्न प्रस्तुतिया दी जायेंगी। इस कार्यक्रम में विभिन्न शख्सियत एवं लोक कलाकारों को सम्मानित भी किया जाना है।

गार्गी मिश्रा ने बताया कि राज्य सरकार की उपलब्धियों, गतिविधियो, कल्याणकारी योजनाओं के सम्बन्ध में देवभूमि उत्तराखण्ड स्मारिका का विमोचन भी किया जाना प्रस्तावित हैदेहरादून। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र में हुए हालिया मतदान में पाकिस्तान को 193 में से 182 देशों का समर्थन प्राप्त हुआ है। यह केवल पाकिस्तान की कूटनीतिक जीत नहीं है, बल्कि भारत की वैश्विक साख को लगी एक गहरी चोट है। यह मोदी सरकार की तथाकथित सशक्त विदेश नीति और झूठे प्रचारतंत्र की पूरी तरह से पोल खोलता है। मीडिया को जारी एक बयान में माहरा ने कहा कि बीते एक दशक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से की गई भारी–भरकम विदेश यात्राएं, करोड़ों रुपये की पीआर रणनीतियां और विश्वगुरु की मिथ्या छवि, सब कुछ आज ध्वस्त होता दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देशों से रिश्ते संभाल नहीं पाए। नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और अब मालदीव तक भारत से दूर हो चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की निष्क्रियता और अवसर चूकने की आदत के चलते, भारत सरकार की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। उन्होंने कहा कि संघर्षविराम की कमजोर और बिना सोच–समझ की नीतियां आज भारत को वैश्विक अलगाव की ओर ध केल रही हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मांग करती है कि भारत सरकार इस अंतरराष्ट्रीय शर्मिंदगी पर देश को तत्काल स्पष्टिकरण दे। विदेश नीति की विफलता को लेकर संसद में विस्तृत बहस कराई जाए। प्रधानमंत्री स्वयं देश को बताएं कि कैसे उनकी ब्रांड मोदी विदेश नीति ने भारत को अलग–थलग कर दिया है। आज पूरी दुनिया में भारत की आवाज कमजोर पड़ती जा रही है और इसका कारण सिर्फ और सिर्फ भाजपा की खोखली विदेश नीति, और झूठ पर आधारित प्रचार तंत्र है।

# सम्पादकीय

## योग दिवस आयोजन के निहितार्थ

योगः कर्मसु कौशलं, योगः समत्वमुच्यते।
शरीरं मनसि स्थितं, आत्मा योगेन लभ्यते।।
वसुधैव कुटुम्बं चेयं, यत्र योगः प्रतिष्ठितः।
भारतस्य दया वाणी, विश्वं योगेन चेतसि।।

अर्थात

योग ही कर्मों में कुशलता है,योग ही समता का नाम है।जब शरीर मन में स्थिर हो,तभी आत्मा की प्राप्ति योग से होती है।जहाँ योग स्थापित होता है,वहीं संपूर्ण विश्व एक कुटुम्ब के समान बन जाता है।भारत की दयालु वाणी,संपूर्ण विश्व को योग के माध्यम से जोड़ती है।

21जून 2025 को 11 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया।योग भारत की चेतना और विरासत का केंद्र है यह भारत की सॉफ्ट पावर का भी सशक्त उदाहरण है।योग एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से,एक समुदाय को दूसरे समुदाय से तथा एक देश को दूसरे देश से जोड़ने का काम करता है। दुनिया भर के लोग इससे लाभान्वित हो रहे हैं।जब व्यक्ति स्वस्थ रहता है; तो परिवार स्वस्थ रहता है। और जब परिवार स्वस्थ रहता है; तो देश स्वस्थ रहता है।योग को जीवन जीने का माध्यम बनाने तथा सभी संस्थाओं से अपील की गई कि योग को जनसुलभ बनाया जाए। योग भारत की प्राचीनतम सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का हिस्सा है,जिसने संपूर्ण विश्व को जोड़ने का कार्य किया है। प्रसन्नता की बात है कि आज यह दिवस न केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए स्वास्थ्य, शांति और समरसता का प्रतीक बन चुका है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं,बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने की प्रक्रिया है।यह आत्मानुशासन, संयम और मानसिक शांति का मार्ग है। आज योग एक वैश्विक अभियान बन चुका है और यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि दुनिया भारत की इस विरासत को स्वीकार करके और अपनाकर लाभान्वित हो रही है।

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग।" भारत की सनातन सोच ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की वैश्विक अभिव्यक्ति है जो हमें याद दिलाता है कि हमारा व्यक्तिगत स्वास्थ्य, हमारी प्रकृति, हमारा पर्यावरण और हमारी सामाजिक संरचनाख़सभी परस्पर गहराई से गूंथे हुए हैं। उत्तराखंड जैसी आध्यात्मिक और प्राकृतिक भूमि पर योग का अभ्यास विशेष महत्व रखता है। युवाओं से आह्वान है कि वे योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं और स्वस्थ भारत के निर्माण में योगदान दें।उत्तराखंड सरकार द्वारा तैयार की गई भारत की पहली योग नीति- 2025 योग साधना के प्रचार-प्रसार एवं भारतीय संस्कृति की समग्रतामूलक,सर्वसमावेशी प्रवृत्ति के उद्घोष की अग्रदूतिका सिद्ध होगी।

जय देवभूमि उत्तराखंड!! जय भारत!!

डॉ.गार्गी मिश्रा

# अमरीका में शरण मांगने वालों में ८५५ फीसदी की वृद्धी

भूपेन्द्र गुप्ता

एक समय था जब ब्रिगेडियर उस्मान को बंटवारे के समय पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव दिया गया था लेकिन उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया था कि भारत मेरा देश है इस धरती में मेरे बुजुर्ग दफन हैंउन्होंने पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनने की बजाय भारत का ब्रिगेडियर बना रहना स्वीकार किया और अपना नौसेरा बचाने के लिये शहीद हो गये।वह तघे अनिश्चितता का समय था,जान-माल का खतरा था किंतु आज तो निश्चंतता का समय है। संवैधानिक और नियामक संस्थायें देश को आजादी के प्रति सजग कर रहीं हैं ऐसे दौर में कुछ खबरें हैरान भी करतीं हैं और चिंतित भी।

संसद में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि पिछले 10 सालों में लगभग 15 लाख भारतीय नागरिकों ने देश की नागरिकता त्याग दी है ।इससे भी जो ज्यादा चिंताजनक आंकड़ा है वह यह कि अमेरिका में शरण मांगने वाले भारतीयों की संख्या में 855 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विदित हो कि अमेरिका में शरण मांगने वाले दो तरह से शरण के लिए आवेदन करते हैं एक तो वह जिन्हें एफर्मेटिव कहा जाता है और दूसरा वे जिन्हें डिफेंसिव कहा जाता है यानि सुरक्षा की दृष्टि से वे अमेरिका में शरण की गुहार लगाते हैं अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट की इमीग्रेंट एनुअल फ्लो रिपोर्ट बताती है कि 2023 में अमेरिका में शरण चाहने वाले आवेदकों में 41हजार 330 भारतीय शामिल थे जो कि 2022 की तुलना में 855 फीसदी ज्यादा है और भी आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें से आधे आवेदक गुजरात राज्य के हैं।जहां 2014 के बाद समृद्धि का विस्फोट हुआ है। समझना जरूरी है कि उन भारतीयों ने क्योंकर सुरक्षा एसाईलम के लिये आवेदन किया है? वर्ष 2022 में शरणार्थी के रूप में आवेदन करने वाले 14 हजार 570 भारतीयों में से 9200 ने डिफेंसिव एसाईलम यानि सुरक्षा शरण का आवेदन किया है।

भारत की अर्थव्यवस्था के उछालें भरने के दावे ,आम नागरिक के लिये सुरक्षा की गारंटी और बेहतर अवसरों के प्रचार के बीच भी अगर 41हजार 330 नागरिक अमरीका में शरण मांग रहे हैं और उनमें भी 50त्न से अधिक सुरक्षा कारणों से तो यह पड़ताल का विषय होना ही चाहिए ? इन सुरक्षा शरण चाहने वाले भारतीयों को देश में क्या खतरा लग सकता है? उनमें से आधे उस राज्य से क्यों हैं जिसमें सर्वाधिक विकास के दावे किये जा रहे हैं?

अमरीका में एलपीआर रिपोर्ट के अनुसार लगभग 28 लाख भारत में जन्मना नागरिक रहते हैं जो मेक्सिको में पैदा हुए अमरीकी नागरिकों के बाद सर्वाधिक संख्या है।अकेले 2022 में ही 1लाख 28 हजार 878 मेक्सीकन,65 हजार.960 भारतीय,53 हजार 413 फिलिपाईन नागरिकों को अमरीकी नागरिकता के लिये न्यूट्रिलाईज किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सामान्यत:आर्थिक ,शैक्षणिक अवसरों और राजनैतिक स्थिरता को देखते हुए सुरक्षित भविष्य की तलाश में लोग अपनी नागरिकता त्याग करने का कठिन फैसला लेते हैं।अमरीका में रहने वाले 28 लाख 31 हजार 330 भारतीयों में 42 फीसदी भारतीय , अमरीकन नागरिकता के लिये अपात्र हैं। इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है?

मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है।

जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोडने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी तो पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं। इसका अर्थ है कि भारतीय नागरिकता त्यागने वालों के मुकाबले भारतीय नागरिकता चाहने वालों की संख्या 1 प्रतिशत भी नहीं है।

लंदन की हेनली एंड पार्टनर की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 7 हजार सुपर रिच धनाढ्य भारत की नागरिकता छोड़ सकते हैं।सरकार ने राज्यसभा में बताया है कि वह इन लोगों की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के बारे में अनभिज्ञ है।भारतीय टेक्स कानूनों,स्वास्थ्य सुविधाओं और इनवेस्टमेंट माईग्रेशन नागरिकता त्यागने की नयी बजह के रूप में सामने आ रही है। मेहुल चौकसी जैसे लोग इसी इवेस्टमेंट माईग्रेशन के नाम पर भाग खड़े हुए हैं। नागरिकता छोडने का एक कारण यह भी है कि कई देश दोहरी नागरिकता स्वीकार नहीं करते,दूसरा बड़ा कारण अन्य देशों में निर्वाध आवाजाही के लिये भारतीय पासपोर्ट पर केवल 60 देशों में बीजा फ्री या आगमन पर बीजा सुविध ा उपलब्ध है जबकि अमरीकन पासपोर्ट पर 186 देशों में यह सुविधा प्राप्त है।

# पाकिस्तान की हिमाकत पर कोई हैरानी नहीं

बलबीर पुंज

समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि भगत सिंह ष्मुसलमानों के प्रति शत्रुतापूर्ण मजहबी नेताओं से प्रभावित थे और भगत सिंह फाउंडेशन इस्लामी विचारधारा और पाकिस्तानी संस्कृति के खिलाफ काम कर रहा है, (और) इस पर प्रतिबंध लगना चाहिए।ष बकौल रिपोर्ट, ष्फाउंडेशन के अधिकारी जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, क्या वह नहीं जानते कि पाकिस्तान में किसी नास्तिक के नाम पर किसी जगह का नाम रखना अस्वीकार्य है और इस्लाम में मानव मूर्तियां प्रतिबंधित है?ष

जो समूह भारत-पाकिस्तान संबंध और श्सिख-मुस्लिम सद्भावना' की संभावनाओं पर बल देते है, वह हालिया घटनाक्रम पर क्या कहेंगे? बीते दिनों पाकिस्तानी पंजाब की सरकार ने यह कहते हुए शादमान चौक का नाम शहीद भगत सिंह समर्पित करने की वर्षों पुरानी मांग को ठंडे बस्ते में डाल दिया कि भगत सिंह क्रांतिकारी नहीं, बल्कि श्अपराधी' और आज की परिभाषा में श्आतंकवादी' थे। जैसे ही यह खबर भारत पहुंची, तुरंत विभिन्न राजनीतिक दलों ने पाकिस्तान को गरियाना शुरू कर दिया। परंतु मुझे पाकिस्तान की इस हिमाकत पर कोई हैरानी नहीं हुई। क्या इस इस्लामी देश से किसी अन्य व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है?

लाहौर में जिस स्थान पर 23 मार्च 1931 को महान स्वतंत्रता सेनानियोंख़ भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई थी, वह जगह शादमान चौक नाम से प्रसिद्ध है। इसी मामले में 8 नवंबर को लाहौर उच्च न्यायालय में सुनवाई थी। तब श्भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन पाकिस्तान' द्वारा अदालत में दायर एक याचिका पर लाहौर प्रशासन ने जवाब देते हुए कहा, ष्शादमान चौक का नाम भगत सिंह के नाम पर रखने और वहां उनकी प्रतिमा लगाने की प्रस्तावित योजना को पूर्व नौसेना अधिकारी तारिक मजीद की टिप्पणी के आलोक में रद्द कर दिया गया है।ष मजीद मामले में गठित समिति का हिस्सा है और उन्होंने कहा था कि भगत सिंह ने एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी की हत्या की थी, इसलिए उन्हें दो साथियों के साथ फांसी दे दी गई थी।

इसी समिति की रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भगत सिंह ष्मुसलमानों के प्रति शत्रुतापूर्ण मजहबी नेताओं से प्रभावित थे और भगत सिंह फाउंडेशन इस्लामी विचारधारा और पाकिस्तानी संस्कृति के खिलाफ काम कर रहा है, (और) इस पर प्रतिबंध लगना चाहिए।ष बकौल रिपोर्ट, ष्फाउंडेशन के अधिकारी जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, क्या वह नहीं जानते कि पाकिस्तान में किसी नास्तिक के नाम पर किसी जगह का नाम रखना अस्वीकार्य है और इस्लाम में मानव मूर्तियां प्रतिबंधित है?ष बकौल रिपोर्ट, ष्फाउंडेशन के अधिकारी जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, क्या वह नहीं जानते कि पाकिस्तान में किसी नास्तिक के नाम पर किसी जगह का नाम रखना अस्वीकार्य है और इस्लाम में मानव मूर्तियां प्रतिबंधित है?ष मामले में अगली सुनवाई 17 जनवरी 2025 को होगी। पाकिस्तान में भगत सिंह का रिश्ता केवल लाहौर जेल तक सीमित नहीं है। जिस अविभाजित पंजाब के लायलपुर में उनका जन्म हुआ था, वह भी अब पाकिस्तान में है। लाहौर के ही नेशनल कॉलेज में भगत सिंह के अंदर क्रांति के बीज फूटे थे और श्नौजवान भारत सभा' का गठन भी लाहौर में किया था। यदि इस पृष्ठभूमि में पाकिस्तान भगत सिंह को अपना श्नायक' मान लेता, तो ऐसा करके वह अपने वैचारिक अस्तित्व, जिसे श्काफिर-कुफ्र' अवधारणा से प्रेरणा मिलती हैख़ उसे प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से नकार देता। पाकिस्तानी सत्ता-वैचारिक अधि ष्ठान के लिए भगत सिंह भी एक श्काफिर' है।

भारतीय उपमहाद्वीप में इस जहरीले चिंतन की जड़ें बहुत गहरी है। गांधीजी ने अली बंधुओं (मौलाना मुहम्मद अली जौहर और शौकत अली) के साथ मिलकर विदेशी खिलाफत आंदोलन (1919-24) का नेतृत्व किया था। परंतु मौलाना मुहम्मद अली जौहर स्वयं गांधीजी के बारे में क्या सोचते थे, यह उनके इस विचार से स्पष्ट हैख़ ष्गांधी का चरित्र चाहे कितना भी शुद्ध क्यों न हो, मजहब की दृष्टि से वे मुझे किसी भी चरित्रहीन मुसलमान से हीन प्रतीत होते हैं।ष बात यदि वर्तमान पाकिस्तान की करें, तो वह विभाजन के बाद अपने दस्तावेजों, स्कूली पाठ्यक्रमों और अपनी आधिकारिक वेबसाइटों में इस बात का उल्लेख करता आया है कि उसकी जड़ें सन् 711-12 में इस्लामी आक्रांता मुहम्मद बिन कासिम द्वारा हिंदू राजा दाहिर द्वारा शासित तत्कालीन सिंध पर किए हमले में मिलती हैं। इसमें कासिम को श्पहला पाकिस्तानी', तो सिंध को दक्षिण एशिया का पहला श्इस्लामी प्रांत' बताया गया है। जिन भारतीय क्षेत्रों को मिलाकर अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनाया गया था, वहां हजारों वर्ष पहले वेदों की ऋचाएं सृजित हुईं थीं और बहुलतावादी सनातन संस्कृति का विकास हुआ था। इसलिए पुरातत्वविदों की खुदाई में वहां आज भी वैदिक सभ्यता के प्रतीक उभर आते हैं, जिसका इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। परंतु पाकिस्तान अपनी छवि सुध रने के नाम पर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, सिंधु घाटी, आर्य सभ्यता, कौटिल्य और गांधार कला से जोडने का प्रयास करता है।

इसी वर्ष 29 मई को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा था, ष्पाकिस्तान को अपनी प्राचीन बौद्ध विरासत पर गर्व है।ष वास्तव में, यह क्रूरतम मजाक है। जिन इस्लामी आक्रांताओंख़ कासिम, गजनवी, गौरी, बाबर, टीपू सुल्तान आदि को पाकिस्तान अपना घोषित श्नायक' मानता है, जिनके नामों पर उसने अपनी मिसाइलों-युद्धपोतों का नाम रखा हैख़ उन्होंने ही श्काफिर-कुफ्र' अवधारणा से प्रेरित होकर भारतीय उपमहाद्वीप में गैर-इस्लामी प्रतीकों (हिंदू-बौद्ध सहित) का विनाश किया था। इस चिंतन में आज भी कोई बदलाव नहीं आया है। जब जुलाई 2020 में खैबर पख्तूनख्वा में निर्माण कार्य के दौरान जमीन से भगवान गौतमबुद्ध की एक प्राचीन प्रतिमा मिली थी, तब स्थानीय मौलवी द्वारा इसे गैर-इस्लामी बताने पर लोगों ने मूर्ति को हथौड़े से तोड़ दिया था। पाकिस्तानी राष्ट्रगान (कौमी तराना) का मामला और भी दिलचस्प है। वर्ष 1947 में इस्लाम के नाम पर खूनी विभाजन के बाद शेष विश्व के सामने पाकिस्तान को तथाकथित श्सेकुलर' दिखाने के लिए मोहम्मद अली जिन्नाह ने हिंदू मूल के उर्दू शायर जगन्नाथ आजाद द्वारा लिखित एक उर्दू गीत को राष्ट्रगान बनाया था।

फिचर्स/विविध

# सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय

मुहासों की समस्या केवल गर्मियों में ही नहीं होती है बल्कि यह दाग पैदा करने वाली समस्या एक्ने प्रोन स्किन में सर्दियों में भी होती है7 यदि आप भी सर्दियों में इनका शिकार हो रहे हैं तो इन टिप्स पर ध्यान दें और इन्हें फॉलो करें7 सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय तरल पदार्थों का सेवन अधिक मात्रा में करें सर्दियों में मुँहासे निकलने का मुख्य कारण स्किन डिहाइड्रेशन और मॉइस्चर की कमी है। पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन करने से इस समस्या से निजात पाया जा सकता है। इस समस्या को कम करने में मिनरल वाटर बेहद उपयोगी है। सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय ताजा हवा में सांस लें बाहर से ठंडी हवा अंदर ना आये इसलिए अधिकतर लोग अपने दरवाजें और खिड़कियां बंद रखते हैं लेकिन इससे ताज़ी हवा अंदर नहीं आ पाती है और कमरे में ड्राई एयर एकत्रित हो जाती है। सुबह ताजा हवा में सांस लेने से मुहासों को कुछ हद तक रोका जा सकता है। सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय चेहरे की सफाई बहुत जरूरी है हर मौसम में फेस को साफ़ रखना बहुत जरूरी है। जहाँ तक सर्दियों का सवाल है यह दुगना जरूरी हो जाता है। सर्दियों की

हवा में बहुत धूल और मिटटी होती है जिससे त्वचा के रोम छिद्र बंद हो जाते हैं। ये बंद होकर कील मुहासों को जन्म देते हैं। इसलिए चेहरे को डीप मॉइस्चराइजिंग क्लींजर द्वारा साफ़ जरूर करें, खास तौर पर शाम को। कुछ ब्यूटी एक्सपर्ट्स ना सिर्फ सफाई के लिए हाइड्रेटिंग क्लींजिंग की सलाह देते हैं बल्कि पोषण के लिए भी इसका सुझाव देते हैं।

मॉइस्चराइजिंग भी जरूरी है सर्दियों में चलने वाली हवाएँ चेहरे की नमी को छीन लेती हैं। त्वचा में मौजूद मॉइस्चर त्वचा की दरारों और परतों को ठीक करता है। हर स्किन टोन वाले को खुजली, निशान और दरारों को मिटाने के लिए मॉइस्चर की जरूरत होती है। जिन लोगों की त्वचा ज्यादा संवेदनशील है उन्हें मॉइस्चर के लिए हाइड्रेटिंग लोशन इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है।

फरूट फेस मास्क यदि आप सर्दियों में त्वचा को नरम और चमकदार बनाना चाहते हैं तो नि:संदेह पोषण बेहद आवश्यक है। स्किन को ठीक करने के लिए आप फरूट फेस मास्क लगा सकते हैं। आप स्किन को पोषण देने के लिए पका हुआ पपीता, केले और लीची इस्तेमाल कर सकते हैं। सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय ज्यादा ना रगड़ें हालांकि त्वचा का मैल उतारना और रगड़ना जरूरी है लेकिन ज्यादा रगड़ने से त्वचा ड्राई और डल बनती है।

सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय किन चीजों से परहेज करना है आपको सर्दियों में ज्यादा सुगंध वाले परफ्यूम और लोशन के इस्तेमाल से बचना चाहिए क्यों कि इनसे त्वचा में दरारें पड़ती हैं। गर्म पानी का ज्यादा देर तक इस्तेमाल नहीं करें क्यों कि इससे त्वचा में मौजूद आवश्यक ऑयल बाहर निकलता है। विभिन्न प्रकार के वैक्स और ऑयल वाले स्किन केयर प्रोडक्ट्स को भी नजरअंदाज करें। सर्दियों में मुहासों को रोकने के उपाय व्यायाम सर्दियों में घर में दुबककर ना बैठें और व्यायाम को ना छोड़ें। व्यायाम से त्वचा वार्म और एक्टिव बनती है जिसे त्वचा में ऑक्सीजन का संचार होता है और त्वचा साफ़ और चमकदार बनती है।

# रेड वाइन पीने वाली महिलाएं होती हैं ज्यादा सुंदर

चाहे आप शराब का सेवन करते हो या फिर न करते हो, लेकिन आपने रेड वाइन का नाम तो सुना ही होगा। रेड वाइन पीने से स्वास्थ्य तो अच्छा रहता ही है साथ में यह सौंदर्य के लिये बड़ी गुणकारी होती है। कई रिसर्च के अनुसार पता चला है कि प्रतिदिन एक-दो गिलास रेड वाइन पीने से प्रोस्टेट कैंसर की रोकथाम में मदद मिलती है, तो इसे नशा समझ कर नहीं बल्कि दवा समझ कर ही पीना चाहिये। रेड वाइन का एक मुख्य घटक रेस्वेराट्रोल है जो बीमारियों के खिलाफ शरीर को मजबूती प्रदान करता है और इस प्रकार लंबा जीवन जीने में मदद करता है। रेड वाइन पीने से महिलाओं की खूबसूरती बरकरार रहती है। इसे नियमित पीने से चेहरे में चमक बनी रहती है। अगर चेहरे पर मुंहासे हैं तो वे और ज्यादा नहीं फैल पाते। साथ ही रूखी त्वचा के लिये तो यह रामबाण से कम नहीं है क्योंकि इसमें नमी को कैद करने के कुछ तत्व पाए जाते हैं। रेड वाइन को पीने से आपके चेहरे पर जल्दी झुर्रियां नहीं पड़ेगी। तो आइये जानते हैं रेड वाइन को पीने से क्या क्या लाभ होता है।

त्वचा पर असरदार रेड वाइन - 1. एंटी एजिंग- वाइन में उच्च मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट, पॉलीफिनॉल पाया जाता है। यह शरीर से फ्री रैडिक्ल का खात्मा करते हैं जो कि बुढापे को दूर करता है। 2. मुंहासो से बचाए- पॉलीफिनॉल रेस्वेराट्रोल शरीर पर सूजन को कम करता है। वाइन मुंह पर मुंहासो को और ज्यादा फैलने से बचाता है। 3. रूखी त्वचा में लाभदायक- अगरआपकी स्किन ड्राई है तो वाइन का हाई कंसट्रेशन अल्फा हाईड्रोक्सी एसिड जैसे, सिट्रिक, टार्टरिक और मैलिक एसिड वाला ही लें। इससे प्राकृतिक नमी त्वचा में हमेशा बरकरार रहेगी और स्किन नरम बनेगी।

4. त्वचा को टोन करे- सूखी रेड वाइन को आप चेहरे पर लगा सकती हैं। इससे त्वचा टोन हो जाएगी और देखने में खूबसूरत लगेगी। 5. स्क्रब के रूप में प्रयोग- 1 कप वाइट वाइन को 1 कप आटे के चोकर के साथ मिलाइये और 4 घंटो के लिये रख दीजिये। बॉडी स्क्रब के लिये यह एक अच्छा प्रयोग रहेगा। इसे हफ्ते में एक बार जरुर आजमाएं। 6. त्वचा को बचाए यूवी रेज़ से- वाइट वाइन में ऐसे तत्व पाए जाते हैं, जो आपकी स्किन को यूवी रेज से बचाते हैं।

# गुस्सा आता है, तो स्वस्थ हैं आप!

आम तौर पर यह माना जाता है कि क्रोध तन और मन दोनों के लिए नुकसानदायक होता है, लेकिन शोधकर्ताओं का कहना है कि कुछ संस्कृतियों में गुस्सा बुरे नहीं बल्कि अच्छे स्वास्थ्य का संकेत होता है। अध्ययन में पता चला है कि अत्यधिक क्रोध को जापानी लोग बेहतर जैविक स्वास्थ्य से जोड़कर देखते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के मनोविज्ञानी शिनोबु किटायामा के मुताबिक, क्रोध को बुरे स्वास्थ्य से जोड़कर देखना आमतौर पर पश्चिमी संस्कृति का हिस्सा है, जहां गुस्से को निराशा, निर्धनता, निम्न जीवन स्तर और उन सभी कारकों से जोड़कर देखा जाता है, जो स्वास्थ को नुकसान पहुंचाते हैं।

शोधकर्ताओं ने अमेरिका और जापान में एकत्र किए गए आंकड़ों का अध्ययन किया। उन्होंने अच्छे स्वास्थ्य के स्तर को मापने के लिए उत्तेजना और ह्रदय से जुडी गतिविधियों का अध्ययन किया, जिन्हें पूर्व में किए गए शोधों में क्रोध की भावना से जोड़कर देखा जाता रहा है। अध्ययन में पाया गया कि अमेरिका में अत्यधिक क्रोध को जैविक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है, जैसा कि पूर्व के शोधों में भी कहा गया है। वहीं, जापान में अत्यधिक क्रोध को जैविक स्वास्थ्य के खतरे के स्तर में गिरावट लाने और अच्छे स्वास्थ्य की निशानी से जोड़कर देखा जाता है।

किटायामा ने कहा, इन अध्ययनों से पता चलता है कि सामाजिक-सांस्कृतिक कारक भी जैविक प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन जर्नल साइकोलॉजिकल साइंस में प्रकाशित हुआ है।

# दर्जा राज्यमंत्री गंगा बिष्ट का विश्वविद्यालय दौरा, विकास के लिए समर्थन का दिया भरोसा

अल्मोड़ा। दर्जा राज्यमंत्री गंगा बिष्ट बुधवार को सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के दौरे पर पहुंचीं। उनके आगमन पर कुलपति प्रोफेसर सतपाल सिंह बिष्ट ने उनका स्वागत किया और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के साथ-साथ चुनौतियों की भी जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति ने शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मियों की कमी, विश्वविद्यालय की वर्तमान गतिविधियों, पाठ्यक्रमों की स्थिति, शोध और नवाचार के क्षेत्र में हो रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी साझा की। साथ ही उन्होंने संरचनात्मक विकास, छात्रों के हित और स्थानीय आवश्यकता आधारित शिक्षा विषयों की आवश्यकता को रेखांकित किया। गंगा बिष्ट ने विश्वविद्यालय की प्रगति

पर संतोष जताते हुए कुलपति के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में नवाचार और छात्रहित में जो कार्य हो रहे हैं, वे कुलपति के दूरदर्शी और समर्पित नेतृत्व को दर्शाते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से प्रस्तुत समस्याओं और आवश्यकताओं को गंभीरता से लेते हुए भरोसा दिलाया कि इन्हें सरकार के समक्ष रखा जाएगा और आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि पर्वतीय क्षेत्र में स्थित यह विश्वविद्यालय स्थानीय युवाओं के लिए उच्च शिक्षा का एक मजबूत आधार है, और इसकी समस्याओं का समाधान शासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने आश्वासन दिया कि शैक्षणिक और शिक्षणेत्तर पदों के सृजन, आधारभूत संरचना के विकास, छात्रावासों की स्थिति में सुधार, छात्राओं की सुरक्षा और सुविधाओं के लिए शासन से हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। गंगा बिष्ट ने विश्वविद्यालय की उन पहलों की सराहना की जो स्वरोजगार, पर्यटन, कृषि, हस्तशिल्प, स्टार्टअप्स और स्थानीय संसाधनों पर आधारित पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने की दिशा में की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास समय की मांग हैं और इन्हें शासन से आवश्यक सहयोग दिलाकर और सशक्त किया जाएगा। बैठक के अंत में यह सहमति बनी कि भविष्य में विश्वविद्यालय और शासन के बीच बेहतर समन्वय के साथ एक ठोस कार्ययोजना तैयार की जाएगी, जिससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता और विकास की दिशा को नई गति मिल सके।

## पंचायत चुनाव: जोनल और सेक्टर अफसरों को प्रशिक्षण दिया

रुद्रप्रयाग। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर लगातार प्रशासन स्तर पर तैयारियां की जा रही है। बुधवार को पंचायत सामान्य निर्वाचन की तैयारियों को लेकर विकास भवन में जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी प्रतीक जैन की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेटों का प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि जनपद में 07 जोन 61 सेक्टर एवं 459 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। मौके पर मुख्य शिक्षा अधिकारी पीके बिष्ट, जोनल मजिस्ट्रेट चंडी प्रसाद रतूड़ी, जिला शिक्षा अधिकारी (बेसिक) अजय कुमार चौधरी, अधिशासी अभियंता लोनिवि इंद्रजीत बोस, जोनल व सेक्टर मजिस्ट्रेट सहित निर्वाचन विभाग की टीम मौजूद थे।

## त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए कार्मिकों का हुआ पहला रेंडमाइजेशन

चमोली। जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप तिवारी के निर्देशानुसार त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों के सुचारु संचालन हेतु प्रथम रैण्डमाइजेशन की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। बुधवार को 6910 कार्मिकों में से रैण्डमाइजेशन के माध्यम से 1832 कार्मिकों का प्रथम चरण के प्रशिक्षण हेतु चयन किया गया है। इसमें 916 पीठासीन अधिकारी और 916 मतदान अधिकारी प्रथम शामिल हैं। जबकि शेष कार्मिकों का प्रशिक्षण द्वितीय चरण में करवाया जाएगा। निर्वाचन कार्य में नियुक्त इन सभी कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन 8 और 9 जुलाई 2025 को राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर तथा राजकीय इंटर कॉलेजए गोपेश्वर में किया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी चयनित कार्मिकों को समय से प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचने तथा प्रशिक्षण में अनिवार्य रूप से प्रतिभाग कर इस दौरान अपनी सभी शंकाओं का समाधान करने के निर्देश दिए। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी डॉ अभिषेक त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, मुख्य शिक्षा अधिकारी धर्म सिंह रावत शामिल रहे।

## वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय का सत्रारम्भ

हरिद्वार। हरिद्वार गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय के शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर समविश्वविद्यालय के मुख्य परिसर स्थित लाल माता यज्ञशाला

मे कुलपति प्रो. हेमलता के. की अध्यक्षता मे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी शिक्षकों तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारियों तथा छात्र ने भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों व छात्रों को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. हेमलता के. ने कहा कि हम सभी समविश्विविधालय के नये सत्र का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से कर रहे है। गुरुकुल कांगड़ी अपनी वैदिक शिक्षा पद्धति के लिए समूची दुनिया मे अपनी विशेष पहचान रखता है। हम सभी को मिलकर समविश्विविधालय को शिक्षा के क्षेत्र मे उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए मिलकर कार्य करना है।इस अवसर पर मै आप सभी को शुभकामनाएं देती हूँ। समविश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र मे अपनी विशेष पहचान रखता है।यहां के छात्रों ने विश्व पटल पर अपनी विशेष पहचान स्थापित की है। सीमित संसाधनों के चलते शिक्षा के क्षेत्र मे निरंतर अग्रसर है इसके लिए सभी शिक्षक व कर्मचारी बधाई के पात्र है।हम सभी को मिलकर विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए कार्य करना है। शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र मे आप सभी के सहयोग से विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस अवसर पर प्रो एल पी पुरोहित, प्रो राकेश जैन, प्रो नवनीत, प्रो देवेन्द्र गुप्ता, प्रो सत्यदेव निगमालन्कार , प्रो मुकेश, प्रो रामप्रकाश वर्णी, प्रो वी के सिंह, प्रो सुरेखा राणा, डॉ सुयश भारद्वाज, डॉ बिंदु मलिक, डॉ महेंद्र अग्रवाल, प्रो विवेक कुमार, रविकांत शर्मा, डॉ राजकुमार भाटिया, डॉ हिमांशु पंडित, प्रो कर्मजीत भाटिया, डॉ वेदव्रत, डॉ संदीप, डॉ. उधम सिंह, रमेश, रविकांत शर्मा, वीरेन्द्र पटवाल, डॉ बिंदु मलिक, डॉ बबीता, डॉ सुनीता, डॉ सीमा शर्मा, डॉ विपुल भट्ट, डॉ दिलीप कुशवाहा, डॉ विपन, डॉ संगीता मदान, डॉ रोशन लाल, कुलभूषण शर्मा, डॉ रविन्द्र कुमार, डॉ पूनम पैनुली, डॉ राकेश भूटियानी, डॉ अनिल डंगवाल, डॉ दीपक, डॉ भारत वेदालंकार, डॉ अश्वनी जांगडा, डॉ विपिन कुमार शर्मा, प्रो बिंदु अरोड़ा, डॉ विनोद कुमार, डॉ अजेन्द्र सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

## पौड़ी में पुलिस विवेचकों ने सीखे फॉरेंसिक के गुर

पौड़ी। पौड़ी पुलिस ने फॉरेसिंग से संबंधित ट्रेनिंग पुलिस लाइन पौड़ी में क्राइम सीन इन्वेस्टिगेशन किट प्रशिक्षण दिया गया। इसमें ड्रग डीटेक्शन किट के उपयोग को लेकर भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण पौड़ी साथ ही रुद्रप्रयाग व चमोली के 49 पुलिस अफसरों व कार्मिकों ने भी हिस्सा लिया। ट्रेनिंग का मकसद अपराध होने पर घटनास्थलों से वैज्ञानिक तरीके से सबूत कैसे जुटाए जाते हैं और इनका संकलन कैसे किया जाए सहित जांच के लिए विधि विज्ञान लैब भेजने तक की जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने बताया कि कैसे जांच में फॉरेसिंग प्रणाली काम में आती है और न्यायिक दृष्टि से भी प्रमाणिक होती है। प्रभारी जिला मोबाइल फॉरेंसिक यूनिट श्रीनगर ने सभी ट्रेनरों को किट के प्रयोग और इसकी व्यावहारिक जानकारी दी। इसके साथ ही ड्रग डिटेक्शन, साक्ष्य संकलन, फिंगरप्रिंटिंग, ब्लड सेल सैंपलिंग और डिजिटल सबूत संरक्षण जैसे विषयों को भी बताया। इस ट्रेनिंग में जिले के सभी विवेचकों के लिए विशेष पुलिसिंग प्रशिक्षण सत्र रखा गया।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

**सम्पादकः**
**गार्गी मिश्रा**
8765441328

**समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।**